जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्यवक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 30 अक्टूबर 2020

जामिया ने 'प्रिंटेड वर्ड्स एंड द स्टोरी ऑफ़ जामिया मिल्लिया इस्लामिया' पर वेबिनार आयोजित किया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इतिहास और संस्कृति विभाग ने ' प्रिंटेड वर्ड्स एंड द स्टोरी ऑफ़ जामिया मिल्लिया इस्लामिया' पर एक वेबिनार का आयोजन किया। विश्वविद्यालय के शताब्दी वर्ष में जामिया की शुरूआत से प्रकाशित इसके साहित्यों के ज़रिए से इसकी विशष्ट शिक्षा पद्धति का विश्लेषण करने के लिए एक वेबिनार की मांग को देखते हुए 26 अक्टूबर, 2020 को इसे आयोजित किया गया। जामिया के इन प्रकाशनों में ऐसी पत्रिकाएँ शामिल हैं जिनमें राष्ट्रवाद पर विचार विमर्श करने और बच्चों में एकता, सेवा और मानवता के रूझान को प्रेरित करने वाला बाल साहित्य शामिल है। विश्वविद्यालय के ये प्रकाशन इस अतुल्य संस्थान की विशिष्ट सांस्कृतिक और शैक्षिक वातावरण को बयां करते हैं।

वेबिनार की शुरुआत विभाग प्रमुख, प्रो निशात मंज़र के स्वागत भाषण से हुई, जिन्होंने कुलपति प्रो नजमा अख्तर और वेबिनार में हिस्सा लेने वाले सभी लोगों का स्वागत किया। इसके बाद संयोजक प्रो रिज़वान क़ैसर ने वेबिनार के अनूठे विषय का परिचय दिया।

जामिया की कुलपति ने अपने उद्घाटन भाषण में जामिया के इतिहास के इस अनूठे पहलू को उजागर करने के लिए आयोजकों की सराहना की और विश्वविद्यालय के इतिहास को 'सक्रिय अभिलेखागार' के रूप में संरक्षित करने का वादा किया। कई प्रतिबद्धताओं के बावजूद, कुलपति ने पूरे वेबिनार में रहते हुए चर्चा को प्रोत्साहित किया।

विश्वविद्यालय के अंग्रेजी के पूर्व प्रोफेसर और वर्तमान में रेख़्ता के वरिष्ठ सलाहकार, प्रो अनीसुर रहमान ने इसकी अध्यक्षता की।

जामिया के मुंशी प्रेमचंद अभिलेखागार की निदेशक, प्रो सबिहा ज़ैदी ने 'द स्टोरी ऑफ जामियाः

ए फ्यू पिं्रटेड प्राइमरी एंड सेकेंडरी सोर्सेज' शीर्षक से एक पेपर प्रस्तुत किया। इसमें जामिया के संस्थापकों के विचारों और गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन में जामिया की मजबूत भूमिका के बारे में विस्तार से बताया गया।

ओ.पी. जिंदल विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर डॉ लारेंस गौटियर ने शिक्षा के प्रति समुदाय को आकर्षित करने के लिए सरल उर्दू और नाटकों का सहारा लेन के जामिया के असाधारण प्रयोग को उजागर किया।

डॉ सुहैल फारूकी ने जामिया में प्रकाशन की समृद्ध परंपरा पर चर्चा की। प्रो रिज़वान क़ैसर की प्रस्तुति 'इदारा तलीम ओ तारक्क़ी' के प्रकाशनों पर केंद्रित थी।

सभी की प्रस्तुतियों के बाद प्रतिभागियों के बीच टिप्पणियों, प्रश्नों और चर्चा के जीवंत चला। प्रो रहमान ने इस सत्र को अत्यंत जानकारीपूर्ण और दिलचस्प बना दिया।

सह-संयोजक, डॉ रोहमा जावेद राशिद के वोट आॅफ थैंक्स के साथ वेबिनार का समापन हुआ। उन्होंने कुलपति को उनके नेतृत्व के लिए धन्यवाद दिया और अकादमिक गतिविधि को ऑनलाइन समर्थन करके अकादमिक उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए उनकी प्रतिबद्धता के प्रति आभार जताया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक